स्वामी विवेकानंद के समाज सेवा का विचार और कार्यों की विवेचना

पृष्ठभूमिः

डा0 गोपाल पाल
सहायक प्रोफेसर
बंगाला विभाग
देवघर महाविद्यालय, देवघर।

स्वामी विवेकानंद के बारे में किसी भी बात पर चर्चा करने के लिए समकालीन पृष्ठभूमि का ध्यान रखना चाहिए। जिस दिन से भारत अधीन था, औपनिवेशिक शोषण ने विकराल रूप धारण कर लिया, जिसके परिणामस्वरूप निम्न वर्गों की सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक स्थिति में सामान्य गिरावट आई। आर्थिक असमानता ने समाज के भीतर वर्ग विभाजन की बाड़ को मजबूत कर दिया। समकालीन धार्मिक संस्थाएँ अपने अस्तित्व पर जोर देने के लिए उठीं, उनमें ब्रह्म समाज, आर्य समाज शामिल थे। कौलिन्य परम्परा को जीवित रखने का प्रयास किया जा रहा है। उत्तरी कलकत्ता के दक्षिणी भागों में सती–दाहों का दमन करके। ब्रह्मसभा और तत्त्वबोधिनी सभा के माध्यम से धार्मिक सुधार का कार्य शुरू हुआ, पूरे बांग्लादेश में जातीय मतभेद प्रबल हो गए, ईसाई मिशनरियों पर हमले होने लगे। हर जगह उच्च जाति के पाखंडियों द्वारा निम्न और मध्यम वर्ग की जातियों का शोषण किया जा रहा था। भूपेन्द्रनाथ दत्त अपनी पुस्तक में लिखते हैं –

"शब्दकल्प द्रुम ग्रंथ में कायस्थ जाति की शुद्धता को सिद्ध करता है"(1)

स्वामी विवेकानंद समाज में विभिन्न प्रतिक्रियाओं, समस्याओं और उथल–पुथल के बीच प्रकट हुए। 19वीं सदी के पुनर्जागरण का भारतीय धर्म, संस्कृति और समाज पर प्रभाव पड़ा और यहां तक कि आर्थिक प्रभाव भी बहुत बड़ा था। गिरिजा शंकर रॉयचौधरी ने कहा " आर्थिक संरचना में परिवर्तन के साथ–साथ सामाजिक संरचना भी स्वाभाविक रूप से बदल गई।' (2)

इस पुनर्जागरण के फलस्वरूप भारत में अंग्रेजी शिक्षा के विस्तार के साथ ही शिक्षित समुदाय विभिन्न नियमों में सामाजिक प्रबंधकों के पाखंड को पकड़ने लगा। और नियम, और यहां तक कि महिलाओं के प्रति इस समाज की बुराई अत्याचार और क्रूरता के दर्शन ने उस समय के बौद्धिक समुदाय की आंखों को पकड़ लिया। इसलिए कई समकालीन विरोध कर रहे थे। राममोहन राय, दयानंद और विद्यासागर उनमें से हैं। उस समय के सामाजिक शोषण को देखकर आलोचक भूपेन्द्रनाथ दत्त ने प्रश्न किया – 'धर्म के समाज में कौन–सा अधर्म चल रहा है"(3)

इस समाज का अत्याचार ऐसा था कि सती–दाह के नाम पर महिलाओं की हत्या को प्रोत्साहित करने का प्रयास किया गया। बाल विवाह के नाम पर अभिजात वर्ग की अतृप्त इच्छाओं, धर्म के नाम पर अज्ञानता और अंधविश्वास ने पूरे समाज को अंधकारमय बना दिया। पुरोहित समुदाय ने तरह–तरह के अंधविश्वासों से आम लोगों को अपने हाथों में जकड़ने की कोशिश की। इस युग के पुनर्जागरण में एक ओर ब्रह्म आन्दोलन था तो दूसरी ओर आर्य समाज। थियोसोफिकल सोसाइटी को भारतीय सुधार और संस्कृति के प्रति अंध आज्ञाकारिता को बढ़ावा देने के लिए भी जाना जाता है। इसके बाद समकालीन भारत में रामकृष्ण आंदोलन का प्रभाव पड़ा। विवेकानंद इस आंदोलन के प्रणेता थे। विवेकानंद के सामाजिक दर्शन और उनके कर्म योग की पृष्ठभूमि में श्रीरामकृष्ण की भूमिका महत्वपूर्ण है, क्योंकि श्री रामकृष्ण का ईश्वर प्रेम सामाजिक चेतना से रहित था। नहीं, विवेकानंद को समाज सेवा की अवधारणा श्री रामकृष्ण से मिली थी। श्री श्री रामकृष्ण कथामृत से ज्ञात होता है कि श्री रामकृष्ण मानवपूजन के द्वारा समाज को स्वस्थ और सुन्दर बनाना चाहते थे। हालाँकि, विवेकानंद का सामाजिक विचार उनके सामाजिक दर्शन और समाज के प्रति वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ अटूट रूप से जुड़ा हुआ है, उन दो मुख्य संस्थाओं को बाहर करने का कोई तरीका नहीं है।

समकालीन प्रभाव

विवेकानंद के समाज चिंता या सामक भावना का समकाल से बहुत गहरा संबंध है। इस मामले में यह कहा जा सकता है कि दीमक से संक्रमित समाज में न केवल एक दिन में समाज को खा सकते हैं, बल्कि वे दिन–ब–दिन समाज को खा जाते हैं। जिस समाज को विवेकानंद ने सोलहवीं शताब्दी से उत्पन्न देखा, आलोचक कहता है – " उन्नीसवीं शताब्दी –के बंगाली (अर्थात राममोहन से विवेकानंद) सोलहवीं शताब्दी की बंगाली सभ्यता को सुधारना और ठीक करना चाहते थे, जो अठारहवीं शताब्दी के अंत में उदास हो गई थी।"(4)

16वीं सदी से हरमदा पुर्तगालियों का समूह बांग्लादेश आया और बांग्लादेश में आतंक फैलाना शुरू कर दिया, साथ ही मिशनरी समुदाय रोमन कैथोलिक "इस देश में आए और बंगाल के गांवों में चर्च बनाए और हिंदुओं और मुसलमानों को पकड़ने लगे और उन्हें ईसाई धर्म में परिवर्तित करें।" (5)

इस युग में राम मोहन के आगमन से समाज में साहित्य में एक प्रगतिशीलता देखी गई, यहाँ तक कि यह भी कहा जा सकता है कि 1774–1833 के बीच आधुनिक बंगाल के समाज में पुनर्जागरण हुआ। असित बंदोपाध्याय महाशय ने कहा कि राजा राममोहन राय ने बंगाली राष्ट्र को मध्यकाल की गांठें काटकर आधुनिक युग के अंतरिक्ष में उड़ना सिखाया। फिर भारत में स्थायी बंदोबस्त शुरू हुआ। उच्चकोटि के व्यापार से बाजार उजड़ गया, धनी समुदाय, सामंतवाद का जन्म

हुआ, राममोहन ने उस पतित समाज में धर्म सुधार और सामाजिक सुधार के मार्ग पर प्रकाश डाला। वे समकालीन चिंतन के प्रतीक बन गए और अपने प्रगतिशील दिमाग को उस समय के सामाजिक शोषण और दमन से बचाने के लिए आंदोलन के रास्ते पर चले गए। उन्होंने सतीय प्रथा, महिलाओं के संपत्ति के अधिकार और ब्रह्म समाज की स्थापना के खिलाफ आंदोलन के माध्यम से हिंदू धर्म में अद्वैतवाद को प्रमुखता देने की कोशिश की। विवेकानंद राजा राममोहन के स्वदेश प्रीति वेदांत उपदेश और सामाजिक चिंतन से प्रभावित थे। आलोचक गिरिजाशंकर रॉय चौधरी पूछते हैं कि " जिस युग में राममोहन ने आवश्यकता से अद्वैतवाद और मायावाद का उपदेश दिया, क्या विवेकानंद ने अनिवार्य रूप से अद्वैतवाद और मायावाद का उपदेश दिया "राममोहन और विवेकानंद के बीच एक ब्रह्म युग का प्रभाव हुआ।"(6)

विवेकानंद ने सामाजिक विचार या सामाजिक दर्शन के क्षेत्र में ईश्वर की अवधारणा और ईश्वर की अनूठी प्रकृति का भी उपयोग किया। समाज सुधारक राममोहन राय ऐसा कहने का साहस नहीं करते। लेकिन विवेकानंद ने राममोहन राय की नकल बिल्कुल नहीं की। राममोहन ने समाज की विभिन्न समस्याओं, विभिन्न रीति–रिवाजों और नियमों पर चर्चा की, लेकिन वे हिंदू शास्त्र में जातिगत भेदभाव, बाल विवाह, बहुविवाह का विरोध नहीं कर सके, अर्थात उन्होंने हिंदू शास्त्र का कभी खंडन नहीं किया, उन्होंने सामाजिक परिवर्तन को स्वीकार किया। "राममोहन सामाजिक गतिशीलता की आवश्यकता और सामाजिक परिवर्तन की अनिवार्यता पर प्रकाश डालने वाले पहले व्यक्ति थे।"(7)

युवा बंगालियों में से एक हेनरी विवियन डेरोजियो का प्रभाव और प्रतिक्रिया देखी गई है। रेवरेंड कृष्णमोहन बंद्योपाध्याय, रामगोपाल घोष, दक्षिणाचरण मुखोपाध्याय और डेरोजियो पंथियों के बीच अन्य लोगों के आचरण ने विवेकानंद की सामाजिक चेतना के भीतर आंदोलन की भाषा तैयार की। ईसाई मिशनरियों के सामाजिक और धार्मिक आदर्शों ने विवेकानंद के हृदय को द्रवित कर दिया। ईसाई मिशनरियों में मार्शमैन, केरी आदि ने हिन्दू धर्म को बदनाम कर ईसाई धर्म का प्रचार करने का प्रयास किया। उनका विवेकानंद ने 20 सितंबर को दसवें दिन के सत्र में दिए गए शिकागो भाषण में आदर्शवाद का जोरदार खंडन किया, जिसमें कहा गया था – "आप ईसाई अपनी आत्माओं को बचाने के लिए मिशनरियों को विधर्मियों के पास भेजने के लिए बहुत उत्सुक हैं। लेकिन यह बताइए कि उनके शरीर को भुखमरी से बचाने की कोशिश क्यों नहीं की जाती? भारत में भयानक अकाल के दौरान हजारों–हजारों लोग भूखे मर गए, लेकिन आप ईसाइयों ने कुछ नहीं किया। आप भारत में हर जगह चर्च बनाते हैं, – " भारत के अरबों गरीब अपने सूखे गले में केवल दो रोटी चाहते हैं। उन्हें खाना चाहिए, और हम उन्हें पत्थर देते हैं। भूखे लोगों को धर्म का उपदेश देना या दर्शन की शिक्षा देना अपमान है।"(8)

विवेकानंद ने समकालीन ईसाई मिशनरियों पर खुलकर हमला किया, उन्हें भूखे लोगों की पुकार सुनाई, उन्होंने उन गरीब भूखे लोगों का पेट भरने के लिए शिकागो में एक सार्वजनिक सत्र में भीख मांगी। इस प्रकरण में श्री रामकृष्ण के प्रभाव की सीमा पर प्रकाश डाला जाना चाहिए। श्री रामकृष्ण की ईश्वर चेतना और सामाजिक चेतना एक साथ जुड़ी हुई थी। श्री रामकृष्ण का उद्देश्य उपदेश देना नहीं, बल्कि समाज के सुख–दुख बांटना था। विवेकानंद प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से उनके सामाजिक विचारों से प्रभावित थे। श्री रामकृष्ण मानव पूजा के माध्यम से समाज को स्वस्थ और सुंदर बनाना चाहते थे। "हजारों लबें–लबें शब्द बोलो, भगवान अब मानव रूप को छोड़कर नहीं सोचा गया है।"(9)

शायद विवेकानंद मार्क्स के सामाजिक चिंतन से प्रभावित रहे होंगे। क्योंकि विवेकानंद की वर्ग शोषण की अवधारणा पर भी कार्ल मार्क्स ने अपने कम्युनिस्ट मेनिफेस्टो में चर्चा की थी, भले ही विवेकानंद की वर्ग और कम्युनिस्ट दृष्टिकोण की अवधारणा मार्क्स की तुलना में बहुत अधिक परिपक्व थी। स्वामी विवेकानंद ने कहा था – "एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र के धन और शक्ति को कम करके समृद्ध और शक्तिशाली बनता है। हर नई ईजाद की गई मशीन ने बीस अमीर और बीस हजार गरीब बना दिए हैं।"(10)

जिसे मार्क्स ने सर्वहारा कहा, "विवेकानंद ने शूद्र का नाम दिया। विवेकानंद ने शूद्रों के भाग्य को कई तरह से व्यक्त किया है। मजदूर वर्ग आशावादी है।

स्वामी विवेकानंद की **समाज सेवा मूलक चिंताधारा** स्वामी विवेकानंद ने खुद को समाजवादी घोषित किया, उन्होंने कहा – "मैं समाजवादी होने का कारण यह नहीं है कि मैं ऐसा पूरी तरह से निर्दोष महसूस करता हूं। मामा नही होने से काना मामा बेहतर है।"(11)

उन्होंने अपना सारा जीवन समाज सेवा के लिए समर्पित कर दिया, उनकी पहचान आज भी दिखाई देती है। सन्यासी होते हुए भी उन्होंने समाज की सेवा में स्वयं को समर्पित कर दिया, वे सामाजिक परिवर्तन के प्रतीक थे, उन्होंने भारतीय समाज में शूद्रों की जागृति का सपना देखा, सामाजिक समानता का सपना देखा, राष्ट्र के विकास की कामना की इस देश की महिला शिक्षा के विकास के बारे में सोचा, महिला समाज के बारे में सोचा, निचली जाति के लोगों के विकास के बारे में सोचा। समकालीन अलगाववादी समाज के बगल में केवल विवेकानंद ने जन जागृति और जन जागरूकता पैदा करने की कोशिश की, समाज की तस्वीर उनके लिए स्पष्ट थी और उन्होंने रिपोर्टर की नजर से समाज का न्याय किया। उन्होंने विभाजित भारत को समानता का मंत्र दिया। जिस समय भारत में विवेकानंद का आविर्भाव हुआ, उस समय समाज की सबसे बड़ी आवश्यकता एकता थी उन्होंने भारत के लोगों को एकजुटता की भाषा से प्रेरित किया, उनके द्वारा वर्णित नव वेदांत मूल रूप से सामाजिक विकास विचारधारा की अभिव्यक्ति है। यह नव–वेदांतिक विचार था जिसने उन्हें समाज सेवा करने के लिए प्रेरित किया। उसे ऐसा प्रतीत होता था कि भगवान के परम व्यक्तित्व और समाज के लोगों के बीच कोई अंतर नहीं है। उन्होंने कहा, – " जीव में जो प्रेम करते है वही ईश्वर सेवा करता है । अनेक रूप हैं आपके सामने, छोड़िए आप भगवान को कहां ढूंढ रहे हैं" (12)

और कहते हैं – "वह परमात्मा ही प्रत्येक जीव का मूल स्वरूप है, वही सबका वास्तविक स्वरूप है। वह सभी का वास्तविक व्यक्तित्व है।"(13)

उनका दिल इस समाज के लिए रोया, उन्होंने अपनी आंखों से समाज की गरीबी देखी, जहां लोग भोजन की कमी के कारण आत्महत्या कर रहे थे, उन्होंने उस दृश्य को भी देखा, उन्होंने समाज की इस बीमारी को ठीक करने की कोशिश की, लगभग समाज के उक्त दोष को ठीक करने के प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष तरीकों का उन्होंने बार–बार उल्लेख किया, सीधे तौर पर गरीब लोगों की सेवा करने के साथ–साथ परोक्ष रूप से शिक्षण के माध्यम से लोगों को जागरूक करने का रास्ता दिखाया। हर राष्ट्र के जीवन में एक लक्ष्य और उद्देश्य होता है, वह लक्ष्य और उद्देश्य जीवन का केंद्र होता है, विवेकानंद ने कहा था – "इस समाज के खिलाफ एक कठोर शब्द मत बोलो। मैं इसे इसकी पिछली महानता के लिए प्यार करता हूं।"(14)

समाज का पदानुक्रम समाज की प्रकृति है, जाति विभाजन भी उस नियम के अंतर्गत आता है। कोई जैसा कर्म करता है, सबके कर्म समान होते हैं, कर्म में सब समान होते हैं, समाज में प्रत्येक राष्ट्र के उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए कोई राजनीति के माध्यम से, कोई धर्म के माध्यम से, या समाज सेवा के माध्यम से दुनिया को कुछ देना चाहता है, विवेकानंद ने राष्ट्र के व्रत के बारे में कहा था कि राष्ट्रीय व्रत वह कार्य है जिसे करने के लिए परमेश्वर ने उस राष्ट्र को नियुक्त किया है, उस कार्य को यह भी पता होना चाहिए कि उस राष्ट्र की प्रगति में कहां स्थान है – "उन्होंने कहा, किसी विशेष राष्ट्र का जीवन एक विशिष्ट मुद्दा है, वह उस राष्ट्र की राष्ट्रीयता है। और जब तक उस पर प्रहार नहीं होता, वह राष्ट्र नहीं मरता"(15)

विवेकानंद ने समाज सेवा के विभिन्न तरीके दिखाए केवल दो मुट्ठी अन्न दान करने से समाज की सेवा नहीं होती, समाज में तरह–तरह की बीमारियाँ और कष्ट होते हैं, विवेकानंद का उद्देश्य शिक्षित करना और जनता को जागरूक करना है, क्योंकि लोग आत्म–जागरूकता से जागेंगे, आम लोगों को यह सिखाया जाना चाहिए आत्मनिर्भर बनो। झोपड़ियों या छोटी झोपड़ियों में दिन गुजारने वालों को लगता है कि वे उच्च वर्ग के पैरों तले कुचले जाने के लिए पैदा हुए हैं। वे अपनी वैयक्तिकता और मानवता को भूल चुके हैं, अपने खोए हुए व्यक्तित्व को पुनः स्थापित करना और मानवता ही उनकी समाज सेवा का मुख्य उद्देश्य है। वह उद्देश्य इतनी आसानी से सफल नहीं होगा, क्योंकि विवेकानंद उस भविष्य को जानते थे, उन्होंने समाज सेवा के अपने मार्ग को मजबूत करने के बारे में सोचा कि अगर गरीब लोग शिक्षा तक नहीं पहुंच सकते हैं, तो शिक्षा उन गरीबों के घर में कारखाने में अन्य सभी जगहों पर जाना पड़ता है। भारत में दुख का मुख्य कारण लोगों की गरीबी है एक अन्य उद्देश्य, उस उद्देश्य को भी प्रभावी बनाने के लिए, वैयक्तिकता का भाव जगाना होगा, जिस वैयक्तिकता को वे खो चुके हैं, इसलिए कहते हैं – "ब्राह्मण के बेटे को एक शिक्षक की जरूरत है, एक चांडाल के बेटे को दस की जरूरत है। – सिर पर तेल लगा हुआ है उसी पर तेल लगाना पागलों का काम है"(16)

वह शिक्षा मामूली डिग्री लेने की शिक्षा नहीं है, नौकरी पाने की शिक्षा नहीं है, वह शिक्षा चरित्र निर्माण की शिक्षा है, अपने पैरों पर खड़े होने की शिक्षा है। खुद के पैर उस शिक्षा से समाज सुधार होगा। स्वामीजी के आशावादी दृष्टिकोण ने भारतीय समाज के हृदय में प्रकाश डाला। स्वामी विवेकानंद आपदा के समय आम लोगों के साथ खड़े होने वाले पहले भारतीय व्यक्तित्व थे। उनके आदर्श दुनिया के अस्तित्व के लिए महत्वपूर्ण हैं, हालाँकि वे एक संन्यासी थे – एक सामाजिक रूप से जागरूक संन्यासी, वे कभी समाज के बहिष्करण के लिए धर्म से चिपके नहीं रहना चाहते थे, बल्कि उनका मुख्य लक्ष्य समाज था – उनके इस दृष्टिकोण ने उन्हें सहिष्णु होने में मदद की, उन्होंने न केवल भारतीय समाज के बारे में सोचा, बल्कि क्या विश्व समाज की विभिन्न समस्याओं और पहलुओं के बारे में उनके मूल विचार किसी अन्य सामाजिक विचारक के लिए संभव हैं या नहीं, इस बारे में संदेह है, इसलिए आलोचक कहता है – "वह सामाजिक उपचार के गुरुदेव हैं, सामाजिक उपचार के चिकित्सक हैं। स्वास्थ्य सुरक्षा। उनके लिए जीवन क्रिया है और विज्ञान और कुछ नहीं बल्कि सामाजिक कला है। उनका दर्शन सामाजिक गतिशीलता की गीता जैसा है"(17)

समाज के विकास के लिए व्यक्ति का विकास आवश्यक है। उन्होंने व्यक्ति के विकास के बारे में बार–बार कहा है, स्वामी जी की समाज सेवा की सोच वास्तव में समाजवादी सोच है, उन्होंने पूरे समाज के बारे में सोचा, किसान, मछुआरे, मोची, चांडाल भी नहीं बचे, उनकी दृष्टि में समाज का विचार कोई अलौकिक विचार नहीं है, अपितु वह सामाजिक विचार बिल्कुल वास्तविक है, इसमें मिट्टी की गंध होती है। जैसे वे अमेरिका और पेरिस के उच्चवर्गीय धनी समाज की खबरें रखते थे, वैसे ही वे भारत में मोची की खबर भी रखते थे। उन्होंने अगले युग के बारे में सोचा और कहा कि अगले युग में शूद्र क्रांति और शूद्र शासन होगा, परिब्रजक पुस्तक में उनकी रचनाओं की यह भविष्यवाणी – "भारत की उच्च जातियाँ – शून्य में गायब हो और एक नए भारत का उदय। मछुआरे, माली, मोची, मेहतर की झोपड़ियों के माध्यम से बाहर आये ने किसान की कुटिया के माध्यम से। किराने की दुकान से बाहर आव , कारखाने से बाहर आव, बाजार से बाहर आव, झाड़ी से, जंगल से, पहाड़ी से, पहाड़ से"(18)

उसने जो सोचा था उस दिन आज साकार होने जा रहा है, आज सवर्ण ब्राह्मण बीते दिनों की बात होने जा रहे हैं, आज शूद्रों यानी एससी, एसटी की उथल–पुथल मची हुई है. क्योंकि लंबे समय से जो लोग शोषित हैं, उत्पीड़ित हैं, जिन्होंने बिना भोजन के लंबा समय गुजारा है, आज वे एक नए भारत का निर्माण करेंगे। लेकिन उन्होंने एक बार भी यह नहीं कहा कि शूद्र शासन करेंगे तो ही समाज की सभी समस्याओं का समाधान हो जाएगा, बल्कि उन्होंने शूद्र संस्कृति को वास्तविकता में बदलने के बारे में सोचा, जिस समाज में वर्ग–संघर्ष न हो, जिस समाज में जाति–संघर्ष न हो, वह समाज विवेकानंद का स्वप्न समाज होगा। यह भी कहा जा सकता है कि शूद्रों का ब्राह्मणवाद उनके साम्य समाज का एक अन्य लक्ष्य है। वे उन वर्गों के सुधार की कामना करते थे जो अब तक उपेक्षित थे, उनकी शिक्षा, उनकी संस्कृति, उनके वर्चस्व के बारे में सोचा। किसी भी मामले में, विवेकानंद चाहते थे कि सभी वर्ग लक्ष्य प्राप्त करें और लक्ष्य के रूप में ब्राह्मणवाद के साथ समाज और सभ्यता में सुधार करें।

स्वामी जी की दृष्टि में महिला समाज :–

विवेकानंद के समाज सेवा के दृष्टिकोण को महिलाओं के लिए विशेष स्थान के रूप में देखा जा सकता है, उनके लिए, नारी कोई देवी नहीं है, लेकिन एक पूर्ण मांस और रक्तक मानवी कहा जा सकता है। महिलाएं एक सामाजिक आधार या सामाजिक शक्ति के रूप में कार्य करती हैं, वैदिक काल की महिलाओं की तरह विवेकानंद का भी इस युग की महिलाओं के प्रति यही दृष्टिकोण है, लेकिन उन्होंने महिलाओं को सामाजिक अधिकारों के प्रति जागरूक करने का प्रयास किया। उन्होंने इस समाज को स्त्री शिक्षा के प्रति जागरूक भी किया है, यदि नारी शिक्षा का विस्तार नहीं किया गया तो वह समाज नष्ट हो जाएगा उन्होंने बार–बार इशारा किया कि कोई सुधार नहीं होगा, विवेकानंद ने उस समाज को बताया जिसमें लड़कियों का उपयोग केवल पुत्र पैदा करने के लिए किया जाता था – "जिनकी माताएँ शिक्षित और नैतिक होती हैं, उनके घरों में महान लोग पैदा होते हैं। – लड़कियों को पहले (Mass) – (जनता) को जगाया जाना चाहिए,तब ही देश का कल्याण।"[19]

इस मामले में वह उदाहरण के रूप में सीता, सावित्री, लीलावती, खान, दमयंती, मीरा और यहां तक कि गार्गी, मैत्रेयी के जीवन के आदर्शों का पालन करने का मार्ग दिखाता है। विवेकानंद ने सच कहा था कि अगर महिलाओं को समाज में सम्मान नहीं दिया जाएगा, अगर उनकी व्यक्तिगत स्वतंत्रता को प्राथमिकता नहीं दी जाएगी, अगर उनके जीवन में खुशी को प्राथमिकता नहीं दी जाएगी, तो वह समाज आगे नहीं बढ़ पाएगा। उन्होंने इस समाज में नारी–उत्पीड़न की घटनाओं को अपनी आँखों से देखा था, उन्हें अपने परिवार में अपनी ही बहन की आत्महत्या का भी पता था, परिवार की माँ के प्रति तरह–तरह की कुरूपता और अवांछित शब्दों से उन्हें पीड़ा होती थी, वह जानता था कि वास्तविकता और आदर्शों के बीच एक बड़ा अंतर है। वे महिलाओं को चारदीवारी के भीतर सीमित रखना महिलाओं के सम्मान के रूप में स्वीकार नहीं कर सकते थे लेकिन पश्चिमी महिलाओं के पुरुषों के साथ बराबरी पर चलने के आदर्शों को भी देखते थे। महिला समाज का विकास उन्नीसवीं सदी के पुनर्जागरण का दूसरा पहलू है। भगिनी निवेदिता के पाश्चात्य आदर्शों पर चलने के आदर्शों की ओर लोगों का ध्यान आकृष्ट करते हुए कहा कि "जिस प्रकार एक पक्षपाती पक्षी अपने पंखों पर उड़ नहीं सकता, उसी प्रकार महिलाएं भी प्रगति कर सकती हैं। समाज रूप पंछी नहीं उड़ सकते, हम चाहते हैं नारी की उन्नति। दूसरे शब्दों में, समाज में महिलाओं की पूर्ण स्वतंत्रता ही महिलाओं की पूर्णता है।"[20]

वह पूर्णता स्त्री शिक्षा से ही आएगी। यदि वे शिक्षित हैं, तो उन्हें अपना उपयुक्त मार्ग मिल जाएगा। विवेकानंद ने बाल विवाह, विधवा विवाह और बहुविवाह जैसी सामाजिक बुराइयों को खत्म करने, महिलाओं के उत्पीड़न और शोषण को खत्म करने और उनके उचित सम्मान और सम्मान को बहाल करने की मांग की। उन्होंने सती–दाह की प्रथा को रोकने के लिए राजा राममोहन राय की प्रशंसा की ,वह महान हिंदू सुधारक राजा राममोहन राय इस तरह के निस्वार्थ कार्य का एक अद्भुत उदाहरण हैं, उन्होंने अपना पूरा जीवन भारत के लिए समर्पित कर दिया। उन्होंने सती–दाह की प्रथा को बंद कर दिया।

वह महिलाओं को केवल गृहिणी के रूप में नहीं देखना चाहते थे, उनका मानना था कि भारत को जीतने के लिए पांच सौ पुरुषों को पचास साल लगने वाले काम में पांच सौ महिलाओं को केवल कुछ सप्ताह लगेंगे। उन्होंने लिखा, एक ओर तो वे महिलाओं को वीरागंणा के रूप में देखना चाहते थे। इसी प्रकार वे भारतीय स्त्रियों में शौर्य के साथ–साथ कोमलता अर्थात् मातृत्व देखना चाहते थे। "भारत के महिला समाज को पुरुषों की तुलना में अधिक महिलाओं की जरूरत है, एक सच्ची शेरनी। आपकी शिक्षा एकता, पवित्रता, असीम प्रेम, प्रतिज्ञाओं की दृढ़ता, सबसे बढ़कर सेल्टिक रक्त जो आपकी रगों में दौड़ता है, आप वास्तव में वह महिला हैं जिसकी हमें आज आवश्यकता है।"[21]

समाज के आम आदमी के लिए विवेकानंद के विचार

विवेकानंद के सामाजिक विचार और समाज सेवा की विचारधारा ने बार–बार आम आदमी को चित्रित किया है। वह गरीब भारतीयों के लिए शिकागो भी गए और 20 सितंबर, 10वें अधिवेशन में अपना रोना व्यक्त किया। ... "उन्हें खाना चाहिए और हम उन्हें पत्थर देते हैं। ... मैं अपने गरीब देशवासियों के लिए आपसे मदद मांगने आया था"[22]

उन्होंने यहां तक कहा कि 2.00 रुपये की मासिक आय वाले कितने लोग लाखों अनाथों के लिए रो रहे हैं? विवेकानंद उन गरीब, अछूत लोगों के लिए दुखी थे, जो हमारे घरों के आसपास, मुट्ठी भर भोजन देने की सोचते हैं, उन्हें अछूत कहकर खारिज कर देते हैं, उन्हीं के लिए वह शिकागो जाता है और उनके जीवन का रहस्य बताता है। उस गरीब मोची के उत्थान के बारे में सोचें उनकी शिक्षा और प्रगति के बारे में सोचें – सार्वजनिक गरीबी भारत में सभी दुखों की जड़ है। "भारत में गरीबी इतनी अधिक है कि गरीब लड़के स्कूल नहीं जाते बल्कि अपने पिता की खेती में मदद करने के लिए खेत में जाते हैं या अन्य जीविकोपार्जन का प्रयास करेंगे ... अगर गरीब लड़का स्कूल नहीं आ सकता है, तो उसे शिक्षा पहुंचाई जानी चाहिए"[23]

जिनका जीवन क्षणभंगुर है, "जो दूसरों के लिए जीते हैं जिन्हें समाज के नीच लोग याद रखना जरूरी नहीं समझते। विवेकानंद उन्हें सच्चा जीवन जीने वाले, जो दूसरों के लिए जीते हैं"[24]

विवेकानंद भारत की विनम्र जनता से अपील करते हैं और कहते हैं – हे भारत मत भूलना – "निम्न जाति, मूर्ख, गरीब, अज्ञानी, मोची, मेहतर, तुम्हारा खून, तुम्हारा भाई। बोलिये–मूर्ख भारतीय गरीब भारतीय , ब्राह्मण भारतीय , चांडाल भारतीय मेरे भाई हैं।"[25]

गरीबों के लिए खुलकर भीख मांगी उनकी आत्मा लोगों के लिए रोती है। उन्होंने खुद को समाज की सेवा के लिए समर्पित कर दिया, अन्नदान कर उन गरीबों को बचाने का प्रयास किया।

"विवेकानंद का कर्मयोग"

स्वामीजी जन मानस के प्रेरक ही नहीं कहे जा सकते हैं। इसका भारत के सामाजिक, नैतिक, मानवीय, आर्थिक विकास पर सीधा प्रभाव पड़ता है। आज झारखंड के टाटा के विशाल औद्योगिक साम्राज्य में विवेकानंद की सीधी भूमिका है, महेंद्रनाथ दत्ता ने इस संबंध में कहा – "स्वामीजी ने टाटा से कहा, आप जापान से देसलाई क्यों ले रहे हैं और देसलाई बेच रहे हैं और जापान को पैसे दे रहे हैं? आपको केवल थोड़ी परेशानी होती है। अगर देसलाई की फैक्ट्री देश में लगे तो आपको भी फायदा होगा, दस लोग उठेंगे और देश का पैसा देश में टिकेगा"(26)

विवेकानंद समाज के पुनर्निर्माण के लिए सामाजिक सुधार चाहते थे, उन्होंने समाज के सभी जातियों, अमीर, गरीब, उच्च, निम्न के लिए शिक्षा के बारे में सोचा, इसलिए उन्होंने कला विज्ञान और व्यावहारिक ज्ञान को गांवों में आम लोगों तक पहुंचाने के लिए पहले नाइट स्कूल की स्थापना की। . उनके बारे में आलोचक ने कहा– "विवेकानंद की आंखों में देश और दशक की सच्ची तस्वीर कैद थी। ध्यानमग्न अवस्था में हिंद महासागर में एक चट्टान पर बैठा एक ध्यानमग्न युवक केवल दुर्दशाग्रस्त आदमी के अलावा उसे कोई भगवान नहीं दिखता"(27)

रामकृष्ण मिशन और रामकृष्ण मठ को उनके काम के मुख्य उद्देश्य की पूर्ति माना जाता था, रामकृष्ण मिशन और रामकृष्ण मठ के दो सबसे महत्वपूर्ण मुखपत्र प्रबुद्ध भारत में विवेकानंद की समाज सेवा के मुख्य विचारों का वर्णन किया गया है। आलोचक विनय सरकार का कहना है कि रामकृष्ण मिशन विश्वविद्यालय के पहले से ही शिक्षण संस्थान के बाहर सामाजिक चिंतन के केंद्रों में से एक रहा है। 1 मई 1897 को बलराम बोस के घर पर रामकृष्ण मिशन की स्थापना हुई, रामकृष्ण मठ और रामकृष्ण मिशन न केवल भगवान की साधना के संस्थान नहीं थे, बल्कि यह कहा जा सकता है कि उन्होंने समाज में सामाजिक और सांस्कृतिक सुधार की योजना बनाकर अपनी शालीनता और आत्म–संतुष्टि प्राप्त की, पाश्चात्य आलोचक उनके इस कर्मयोग को कहते है ।

"The must important feature of Ashrams of Morderon type is combination of Religious activities proper with social and charitable function." (28)

जिस दिन इस रामकृष्ण मिशन और रामकृष्ण मठ की स्थापना हुई, उस दिन श्री रामकृष्ण ने इस दुनिया को छोड़ दिये, बारहनगर के जंगली जंगल में प्रेतवाधित घर में युवकों के साथ मठ की स्थापना की। बुद्ध का वह संदेश मठ और मिशन का मुख्य उद्देश्य के रूप में चिह्नित – "बहुजन हिताय बहुजन सुखाय च/ आत्मानोमोक्षार्थंग जगद्धितय च । उनके महान उद्देश्य को पूर्ण सफलता मिली, उन्होंने समाज के अलावा कुछ भी नहीं सोचा, ऐसा लगता है कि समाज सेवा का उद्देश्य उनके सभी महान कार्यों के संग्रह में प्रवेश कर गया। भारत में नारी समाज की विभिन्न समस्याओं से व्यथित होकर उन्होंने नारी शिक्षा और नारी जागरण के लिए नारी–मठ की स्थापना करने का विचार किया। रामकृष्णदेव के स्त्री–विचारों से प्रभावित होकर उन्होंने कहा– "इसीलिए मेरी पहली पहल नारी–मठ की स्थापना की थी। उक्त मठ मैत्रेयी और उच्च विचार वाली महिलाओं का प्रतीक होगा।"(29)

जो इस महिला मठ में पढ़कर आगे चलकर समाज की महिलाओं को पढ़ाएंगी, महिलाओं की शिक्षा का प्रसार करेंगी। यहां उन्होंने महिलाओं को मानसिक और वैवाहिक रूप से स्वतंत्र बनाने के बारे में सोचा। विवेकानंद ने भारत में एक आधुनिक महिला समाज के सपने को साकार करने की कोशिश किया रामकृष्ण मिशन और रामकृष्ण मंच की कार्यवाहियों से विदित होता है कि हर प्रकार की प्राकृतिक आपदा में इस संघ के सदस्य आगे आकर पीड़ितों की जान बचाते हैं, सूखा, बाढ़, भूकम्प, सर्वहारा ग्रामों को रहने योग्य बनाते हैं। अकाल या महामारी से जनजीवन अस्त–व्यस्त, वे भोजन, वस्त्र और सेवा दान कर सामाजिक घावों को भरते हैं। उनके काम पर टिप्पणी करते हुए आलोचक चंदन पाल लिखते हैं,– "वे मूल योजनाकार, दूरदर्शी हैं। वह संसार भर में अपने दबंग आत्मगौरव में सक्रिय है। वह युगों से लोगों को अपना उचित कर्म देते आ रहे हैं।"(30)

विवेकानंद की समाज सेवा की प्रासंगिकता स्वामी जी के जन्म वर्ष को 160 वर्ष हो गए हैं। उनके समाज सेवा के विचार, उनके समग्र विचारों की प्रासंगिकता शाश्वत काल के समान सत्य रहेगी। उनका विचार अमीरों से लेकर गरीबों तक, लगभग सभी वर्गों के लोगों की आत्मा और आत्मा की जरूरतों को पूरा करता था, सभी उनके समाज सेवा के मुख्य उद्देश्य से प्रभावित थे। शूद्रों के बारे में उनकी भावी दृष्टि जो आज साकार होने जा रही है। आज भारत में शूद्र को विशेष स्थान दिया गया है, आज भी शूद्र को समाज के शासक वर्ग में उचित स्थान प्राप्त है। भूपेन्द्रनाथ दत्ता ने महाशय विवेकानन्द के भावी विचारों को व्यक्त करते हुए कहा है – "भारतीय समाज की दुर्दशा और विश्व के अन्य देशों में सर्वहारा वर्ग के पतित दुर्भाग्यों को याद करते हुए उन्होंने भविष्यवाणी की थी, फिर भी एक दिन ऐसा आएगा जब शूद्रवाद से शूद्र वर्ग जागृत होगा। वे हर समाज में पूर्ण अधिकार प्राप्त करेंगे"(31)

विवेकानंद की भविष्यवाणी आज पूरी तरह सच हो गई है। विवेकानंद ने समाज के आम लोगों के लिए शिक्षा प्रदान किया आज बहुत आवश्यकता है, आज मानवता की शिक्षा, नैतिक शिक्षा, समानता की शिक्षा, भाईचारे की शिक्षा सबसे अधिक मूल्यवान है। जिस शिक्षा की विवेकानंद ने कभी समाज के सभी वर्गों के लिए कल्पना की थी, वह आज की शिक्षा प्रणाली में निहित है, लेकिन व्यावहारिक अनुप्रयोग का अभाव है, आज डिग्री मिल जाए तो भी हम इंसान नहीं बन सकते आज उस अँधेरे में विवेकानन्द का बनाया उजाला मार्ग ढूँढ़ते हैं। आज भी जब महिलाओं पर अत्याचार होता है और उन्हें आत्महत्या के लिए मजबूर किया जाता है, तब भी स्वामीजी की स्त्री–चेतना को याद किया जाता है। याद रखें कि अगर आज की नारी विवेकानंद की राह पर चले तो जीवन में कोई रुकावट नहीं आएगी, कोई बाधा उसे रोक नहीं पाएगी, वह उसी तरह मां बनेगी। दूसरी ओर स्त्री सच्ची जीवनसाथी बनेगी, कोमलता को शौर्य से जोड़कर नारी अपने व्यक्तित्व को अभिव्यक्त करेगी। उन्होंने पूरे समाज को बेहद करीब से देखा। स्वामी जी ने लोगों के लिए जो नई सोच

बनाई, वह सभी 160 साल बाद भी आज उतनी ही मूल्यवान है, उसके विचार सदा बने रहेंगे, जब तक मानव समाज है, जब तक इस संसार में लोग हैं, तब तक विवेकानंद के विचारों का मूल्य रहेगा। उनके समाज सेवा विचारों की चरम अभिव्यक्ति हमें उनके परम सत्य के माध्यम से मिलती है – "भारतीय समाज मेरे बचपन की शय्या है, मेरे यौवन का वन है, मेरे वृद्धावस्था का वाराणसी है"।[32]

संदर्भ

1 स्वामी विवेकानंद भूपेंद्रनाथ दत्ता, नव भारत प्रकाशक, कलकत्ता, 1954, पृष्ठ 54
2 स्वामी विवेकानंद और उन्नीसवीं सदी बंगाल की गिरिजाशंकर रॉय चौधरी, उदबोधन कार्यालय, कलकत्ता, सन् 1334, पहला संस्करण, पृष्ठ 267.
3 स्वामी विवेकानंद भूपेंद्रनाथ दत्ता, नव भारत प्रकाशक, 1954, पृष्ठ 9.1
4 स्वामी विवेकानंद और उन्नीसवीं शताब्दी बंगाल गिरिजा शंकर रॉय चौधरी, उदबोधन 2 कार्यालय, कलकत्ता, सन् 1334 प्रथम संस्करण, पृष्ठ 268.
5 बंगाली साहित्य का पूरा इतिहास डॉ असित कुमार बंद्योपाध्याय, आधुनिक पुस्तक एजेंसी प्राइवेट लिमिटेड, कलकत्ता, पहला प्रकाश 1966 पुनः संस्करण 2008–09, पृष्ठ 247
6 स्वामी विवेकानंद और बंगाल की उन्नीसवीं शताब्दी, गिरिजाशंकर रॉय चौधरी, उदबोधन और कार्यालय, कलकत्ता, सन् 1334, पहला खंड, पृष्ठ 204
7 तदेव पृ. 238.
8 शिकागो भाषण स्वामी विवेकानंद, उदबोधन कार्यालय, कलकत्ता, बीसवां संस्करण अप्रैल 1963 पुनः संस्करण 2009 पृ. 41–42.
9 श्री श्री रामकृष्ण कथामृत : श्रीम कथित , रिपब्लिक पब्लिकेशन 2 सितम्बर 1991 पृ 955
10 स्वामी जी के बातें और लेख, विवेकानन्द Vol-3, उदबोधन कार्यालय, कलकता–1964, पृ:243
11 तदेव खंड VII पृष्ठ 350।
12 स्वामीजी के उपदेश संक्षिप्त : रामकृष्ण मिशन शारदापीठ, बेलूर मठ, जुलाई 2008, पृष्ठ 17
13 तदेव पृष्ठ 35
14 स्वामी जी की बातें और लेख विवेकानंद.Vol-5 उदबोधन कार्यालय, कलकत्ता, 1964, पृ:270.
15 तदेव पृष्ठ 270
16 तदेव खंड 7 पृष्ठ. 76.
17 रामकृष्ण विवेकानंद का सामाजिक दर्शन विनय सरकार (अनुवादक प्रमथ नाथ पाल) प्रभात कार्यालय, कलकत्ता, सन 1384, पृष्ठ 31
18 विवेकानंद की पूर्ण रचनाएँ खंड 1, सुधांशु रंजन घोष द्वारा संपादित अनुवाद, पहला कामिनी संस्करण, कामिनी पब्लिशिंग हाउस, कलकत्ता, अप्रैल 1994, पृष्ठ 67
19 स्वामी विवेकानंद के शब्द और लेख खंड–9 ,उदबोधन कार्यालय, कलकत्ता 1964, पृ. 34
20 तदेव खंड 4, पृष्ठ 305
21 तदेव खंड 7, पृष्ठ 430
22 शिकागो व्याख्यान स्वामी विवेकानंद उदबोधन कार्यालय, कलकत्ता, उनचास पुनर्मुद्रण, फाल्गुन 1415, पृ. 41–42
23 आइये आदमी बनीये, स्वामी विवेकानंद, संकलनकर्ता, स्वामी सोमेश्वरानंद, उदबोधन कार्यालय, कलकत्ता प्रथम संस्करण 1985– 86, पृष्ठ 15
24 तदेवः पृ.15.
25 विवेकानंद की पूर्ण रचनाएँ प्रथम वर्तमान भारत, अनुवादित, सुधांशु रंजन घोष द्वारा संपादित, प्रथम कामिनी प्रकाशन, अप्रैल 1994, पृष्ठ 137
26 विवेकानंद और समकालीन भारत शंकरी प्रसाद बोस, खंड 5 कलकत्ता, मोंडल बुक हाउस, चौथा संस्करण, पृष्ठ 142
27 कवि और संयासी स्वामी शास्त्र ज्ञानानंद द संडे इंडियन, खंड–6, अंक–8, 22 जनवरी–2012, पृष्ठ 31
28 हिंदू धर्म परंपरा और समकालीनता, लिटमैन और रयबाकोव, वोस्तोक, 1989, पृष्ठ संख्या 70.
29 स्वामी विवेकानंद की बातें और लेखन, खंड 7, उदबोधन कार्यालय कलकत्ता, 1964, पृष्ठ 76
30 नरेन शिक्षादेवे, चंदनपाल, द संडे इंडियन, खंड 6, अंक 8, 22 जनवरी 2012, पृष्ठ 40
31 स्वामी विवेकानंद भूपेंद्र नाथ दत्ता नव भारत प्रकाशक 1954, पृष्ठ 15
32 विवेकानंद रचना प्रथम, वर्तमान, अनुवादित, सुधांशु रंजन घोष द्वारा संपादित, प्रथम कामिनी पब्लिशिंग हाउस, अप्रैल 1994, पृष्ठ 137

ग्रंथ सूची

1 विवेकानंद और समकालीन भारतः शंकरी प्रसाद बोस, मंडल बुक हाउस, कलकत्ता, चौथा संस्करण, 1985, 1992
2 भारतीय समाज पद्धति, भूपेंद्रनाथ दत्ता, नव भारत प्रकाशक, कलकत्ता, प्रथम संस्करण 1983
3 विवेकानंद भूपेंद्रनाथ दत्ता, नवभारत पब्लिकेशन, कलकत्ता तीसरा संस्करण 1994

4 विवेकानंद का समाज दर्शन, प्रो. स्वंतना दासगुप्ता, उदबोधन कार्यालय, कलकत्ता, प्रथम संस्करण 1370
5 स्वामी विवेकानंद रचना समग्र, प्रथम अनुवाद और संपादन, सुधांशु रंजन घोष,कामिनी प्रकाशन, कलकत्ता, प्रथम संस्करण 1994
6 शिकागो भाषण स्वामी विवेकानंद, उद्घाटन कार्यालय, 20वां संस्करण 01.04.1963
7 आईये आदमी बनीये स्वामी विवेकानंद, संकलनकर्ता, स्वामी सोमेश्वरानंद, उदबोधन कार्यालय पहला संस्करण, 1985–86
8 स्वामी विवेकानंद द्वारा शब्द और रचनाएँ उदबोधन कार्यालय, कलकत्ता, 1964
9 स्वामी विवेकानंद और बंगाल की उन्नीसवीं शताब्दी गिरिजा शंकर रॉय चौधरी उदबोधन कार्यालय, कोलकाता, सन् 1334
10 बंगाला साहित्य का पूरा इतिहास, असित बनर्जी, मॉडर्न बु.ए. कलकत्ता, 1966 पृ. 2008–09
11 श्री श्री रामकृष्ण कथामृतम श्रीम कथित, रिफ्लेक्ट प्रकाशन, कलकत्ता, पहली रिलीज, 1 जनवरी, 1983, छठी छपाई 1991
12 द संडे इंडियन प्रधान संपादक, अरिंदम चौधरी, प्रकाशक– अशोक बोस, नई दिल्ली–17, खंड–6,अंक–8, 22–जनवरी–2012